मनमिन माचार

Manmin Hindi News no. 784 March 2026 वे लोग जो परमेश्वर से मिले

७ साल से चली आ रही राइनाइटिस से चंगाई

सेरी जंग द्य महिलाए ५७ए बुप्योंग-गुए इंचियोन

यह कार्यक्रम 6 भाषाओं में डब किया गया है
(अंग्रेज़ी, चीनी, जापानी, स्पेनिश, रूसी और फ़्रेंच)
और 13 भाषाओं में सबटाइटल उपलब्ध हैं
(अंग्रेज़ी, चीनी, जापानी, स्पेनिश, रूसी, फ़्रेंच,
उर्दू, हिंदी, स्वाहिली, तमिल, रोमन और हिब्रू)।

कोविड-१९ महामारी के बादए जब मैं पचास वर्ष की हुईए मुझे राइनाइटिस हो गया और यह धीरे-धीरे बढ़ता गया। मुझे हमेशा बहती नाक और तेज़ छींक के साथ रहना पड़ता थाए और मास्क पहनने पर भी यह नियंत्रित नहीं होता था। मैं फूड सर्विस में काम करती हूँए इसलिए धुएँ और नमी के संपर्क में रहने से मेरी स्थिति और खराब हो जाती थी। मुझे दिन में तीन बार दवा लेनी पड़ती थी। पूरे सप्ताह दवा लेना ज़रूरी थाए और खासकर वसंत में परागकण अधिक होने पर या शुष्क शरद ऋतु मेंए लक्षण इतने गंभीर हो जाते थे कि मुझे एंटीबायोटिक इंजेक्शन तक लेने पड़ते थे। दिसंबर २०२३ मेंए वरिष्ठ पादरी का निधन हो गयाए और जब मैंने २०२४ की वसंत ऋतु में उनके स्मारक स्थल का दौरा कियाए तो मेरा हृदय बदल गया। अपने ढीले-ढाले विश्वास जीवन पर चिंतन करते हुएए मैंने पश्चाताप में बहुत आँसू बहाए और यह संकल्प लिया कि मुझे एक अधिक परिश्रमी मसीही जीवन जीकर उनके द्वारा मिली कृपा का प्रतिदान करना चाहिए। उसके बादए

मैंने परिस्थितियों के बावजूद प्रार्थना करना नहीं छोड़ा और दानियेल प्रार्थना सभा में निष्ठापूर्वक भाग लिया। परिस्थितियाँ अनुकूल न होने पर भीए मैंने [illegible] प्रसारण के माध्यम से घर पर प्रार्थना सभा में भाग लिया। मैंने रविवार की आराधना को और अधिक सच्चे मन और आत्मा से किया और अन्य सभाओं में भी यथासंभव भाग लेने का प्रयास किया। हर आराधना मेंए मैंने पास्टर सूजिन ली से रोगियों के लिए प्रार्थना ईमानदारी से ग्रहण की। जैसे-जैसे मैं अपने आप को बदलने और मिली हुई कृपा का प्रतिदान करने के लिए आगे बढ़ती रहीए २०२५ के चुसोक (कोरियाई धन्यवाद दिवस) के आसपास मेरे लक्षण धीरे-धीरे सुधारने लगे। मुझे पता ही नहीं चला कि मुझे अब दवा लेने की आवश्यकता नहीं रहीए मेरी छींक बंद हो गई और मेरी बहती नाक लगभग पूरी तरह ठीक हो गई। अबए लगभग पाँच महीने बादए मैं बिना किसी दवा के शांति से अपना दैनिक जीवन जी रही हूँ। हालेलुया! यहाँ तक कि मेरे बॉस भीए जो हमेशा मुझे पीड़ित देखते थेए आश्चर्यचकित रह गए। मैं उस अच्छे परमपिता परमेश्वर को सारा धन्यवाद और महिमा देती हूँ जिन्होंने मुझे उस राइनाइटिस से चंगा किया जो दवा या इंजेक्शन से ठीक नहीं हो पा रहा था।

छह दिनों में घुटने की हड्डी के फ्रैक्चर से चंगाई

क्योंगसू किम द्य पुरुषए ६५ए सियोल

पिछले वर्ष ८ अक्टूबर (बुधवार)ए चुसोक की छुट्टी के दौरानए मैं अपने परिवार के साथ लंबे समय बाद पहाड़ पर चढ़ने गया। लगभग १५ मिनट बादए मेरा बायाँ टखना एक उभरे हुए पत्थर में फँस गया और मैं गिर पड़ा। मैंने उठकर आगे बढ़ने की कोशिश कीए लेकिन घुटने में तेज़ दर्द के कारण एक कदम भी चलना असंभव थाए इसलिए मुझे वापस नीचे आना पड़ा। नीचे उतरना चढ़ाई से भी अधिक दर्दनाक था। मैंने दोनों हाथों के सहारे किसी तरह एक पैर पर नीचे उतरकर टैक्सी तक पहुँचा।टैक्सी में जैसे ही मैंने अपने घुटने को छुआए मुझे साफ़ महसूस हुआ कि हड्डी टूट गई है। घर पहुँचने के बाद भी मैं एक कदम नहीं चल सकाए इसलिए पास के क्लिनिक गया। वहाँ से मुझे तुरंत बड़े अस्पताल के इमरजेंसी रूम भेज दिया गया। ड़ज्ञ के बाद डॉक्टर ने कहाए आपकी घुटने की हड्डी टूट गई हैए और सर्जरी आवश्यक है।”डॉक्टर ने कहा कि सर्जरी के बाद बैसाखी और पुनर्वास की ज़रूरत होगी और १० अक्टूबर को ऑपरेशन तय करने की सलाह दी। लेकिन अगर मैं अस्पताल में भर्ती होताए तो १२ अक्टूबर को चर्च की ४३वीं वर्षगांठ सेवा में शामिल नहीं हो पाता। इसलिए मैंने विश्वास से चंगाई पाने का निर्णय लिया और घर लौट आया।मैंने हर दिन प्रार्थना में पश्चाताप किया और पादरी सूजिन ली की प्रार्थना प्राप्त की।१२ अक्टूबर कोए दर्द बहुत अधिक थाए लेकिन मैं व्हीलचेयर के साथ समारोह में पहुँचा। जब पादरी सूजिन ली ने मुझे देखा और सिर हिलाकर अभिवादन कियाए उसी क्षण मेरे दिल में अद्भुत शांति भर गई।पहली सभा के बादए मैंने स्प्लिंट हटाकर बैठने की कोशिश की—कोई दर्द नहीं था। दूसरी सेवा के दौरान मैंने पट्टी भी हटा दी और चलने की कोशिश की—आश्चर्यजनक रूप से कोई दर्द नहीं था। सभा के बादए पादरी ने मेरे घुटने पर हाथ रखकर प्रार्थना कीए और उसी क्षण मेरा दर्द पूरी तरह समाप्त हो गया। अगले दिन मैं सामान्य रूप से काम पर गया।१४ अक्टूबर को ग.तंल में डॉक्टर ने कहाए हड्डी लगभग पूरी तरह जुड़ चुकी है।” हालेलुया! मैं परमेश्वर को धन्यवाद और महिमा देता हूँ।

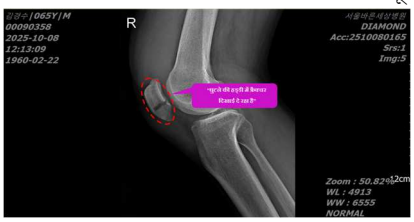

एक्स-रे प्रार्थना से पहले (२०२५ए१०ए०८द्ध

एक्स-रे प्रार्थना के बाद (२०२६ए०१ए०६

१० वर्षों से चला आ रहा त्वचा का खुजली रोग समाप्त हो गया

यूइजो शिन द्य पुरुषए ८४ वर्षए गंगडोंग-गुए सियोल

लगभग दस वर्षों तकए एक ऐसा दर्द मेरे जीवन के साथ जुड़ा रहा जिसने मुझे एक भी दिन चैन से नहीं रहने दिया और मुझ पर गहरे निशान छोड़ दिए। सुबह आँख खुलने के क्षण से लेकर रात को सोने तक—यहाँ तक कि सोते समय भी—यह मुझे छोड़ता नहीं था। उस पीड़ा का नाम था *दीर्घकालिक त्वचा खुजली (क्रॉनिक स्किन इचिंग)*। कई साल पहलेए जब मैं एक निर्माण कार्यकर्ता थाए तो मैंने थोड़ा युवा दिखने की साधारण इच्छा से अपने बाल रंगने शुरू किए। मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह निर्णय मुझे इतनी लंबी और गहरी पीड़ा के रास्ते पर ले जाएगा। शुरू में मुझे लगा कि यह खुजली केवल थोड़ी देर की असुविधा हैए लेकिन पता ही नहीं चला कि कब यह मेरी रोज़मर्रा की ज़िंदगी का हिस्सा बन गई। दिन और रात की सीमा को तोड़ते हुएए यह अंततः एक ऐसे दर्द में बदल गई जिसने मेरे पूरे जीवन को जकड़ लिया। रात में भीए दिनभर की थकान के बाद जब मैं आराम करने के लिए लेटताए तब भी यह पीड़ा मुझे छोड़ती नहीं थी। जितना मैं दाँत भींचकर खुद को खुजलाने से रोकने की कोशिश करताए उतनी ही ज़िद्दी होकर यह खुजली मुझे अंदर तक कुरेदती रहती। मैंने तो यह भी सोचाए काश शरीर पर दिखने वाले घाव होतेए ताकि मैं इस दर्द को किसी को समझा तो पाता।" बाहर से मैं ठीक दिखाई देता थाए लेकिन यह अदृश्य पीड़ा चुपचाप और गहराई से मुझे भीतर ही भीतर खा रही थीए मेरे मन और हृदय को धीरे-धीरे कमजोर कर रही थी। मैं एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल जाता रहाए दवाइयाँ बदलता रहा और लगभग हर उस इलाज को आजमाया जिसे प्रभावी बताया गया थाए लेकिन जवाब हमेशा एक ही होता: "हमें कारण नहीं पता।" "बाल रंगना बंद कर दीजिए।" मैं बाहर से मुस्कुराकर मज़ाक में कहताए तो क्या मुझे पूरी ज़िंदगी सफेद बालों के साथ ही जीना होगाद्द किन अंदर से मेरा दिल पूरी तरह थक चुका था। क्या यह पीड़ा कभी खत्म होगीद्द क्या मुझे पूरी ज़िंदगी ऐसे ही जीना पड़ेगाद्द ये सवाल एक भी दिन मेरे मन से दूर नहीं हुएए बल्कि मेरी ज़िंदगी पर छाया की तरह हमेशा मेरे साथ रहे। फिरए १४ दिसंबर २०२५ कोए मैं डीकन कीजू सॉन्ग के प्रचार के माध्यम से मनमिन सेंट्रल चर्च में पंजीकृत हुआ। जब मैंने चर्च जाना शुरू कियाए तो पादरी सूजिन ली द्वारा दिए गए जीवन के वचन मेरे लिए एक निर्णायक मोड़ बन गएए जिसने कई वर्षों से पीड़ा में बंधे मेरे जीवन की दिशा को मूल रूप से बदल दिया। मेरे जीवन का केंद्रए जो केवल समस्याओं और पीड़ा पर टिका हुआ थाए धीरे-धीरे बदलकर उस जीवन में परिवर्तित होने लगा जो महान और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ओर देखता है। उसी क्षण सेए मेरे हृदय के एक कोने में आशा की एक ऐसी किरण जन्म लेने लगीए जिसे मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था और जिसे मैं पूरी तरह समझ भी नहीं पा रहा था। फिरए उसी वर्ष २२ दिसंबर कोए एक सदस्य ने मुझे *मुआन स्वीट वॉटर* दियाए जो कड़वे पानी से मीठे पानी में बदल गया था (निर्गमन १५रू२५द्ध। मैंने विश्वास के साथ इसे अपने शरीर पर लगायाए यह इच्छा रखते हुए कि मैं चंगा हो जाऊँ। यह मेरा विश्वास का कार्य था—अब मानव तरीकों पर निर्भर रहने के बजायए उस समस्या को पूरी तरह परमेश्वर को सौंप देना जिसे मैं पहले छोड़ने के लिए मजबूर महसूस कर चुका था। इसके बादए मेरे जीवन में कुछ ऐसा हुआ जिसे मैं कभी भूल नहीं सकता। जब मैं सोने के लिए लेटाए तो मुझे खुजलाने की ज़रूरत नहीं पड़ीए और जब सुबह मेरी आँख खुलीए तो वर्षों से मुझे सताने वाली पीड़ा बिना किसी निशान के गायब हो चुकी थी। दस वर्षों से जिसका कारण अज्ञात थाए वह खुजली पूरी तरह समाप्त हो गई। हल्लेलुयाह!यह केवल थोड़ी-सी सुधार नहीं थी। यह पूर्ण चंगाई थी। उस क्षण मैंने स्पष्ट रूप से समझ लिया कि जो समस्या मानव के हाथों से कभी हल नहीं हो सकतीए वह परमेश्वर के स्पर्श से एक पल में समाप्त हो सकती है। मैं उस परमपिता परमेश्वर को समस्त धन्यवादए स्तुति और महिमा अर्पित करता हूँए जिन्होंने दस वर्षों से मुझे जकड़े हुए इस गहरे और लंबे दुख को तुरंत समाप्त कर दिया। मैं डीकन कीजू सॉन्ग का भी हृदय से आभारी हूँए जिन्होंने मुझे चर्च तक पहुँचाया।

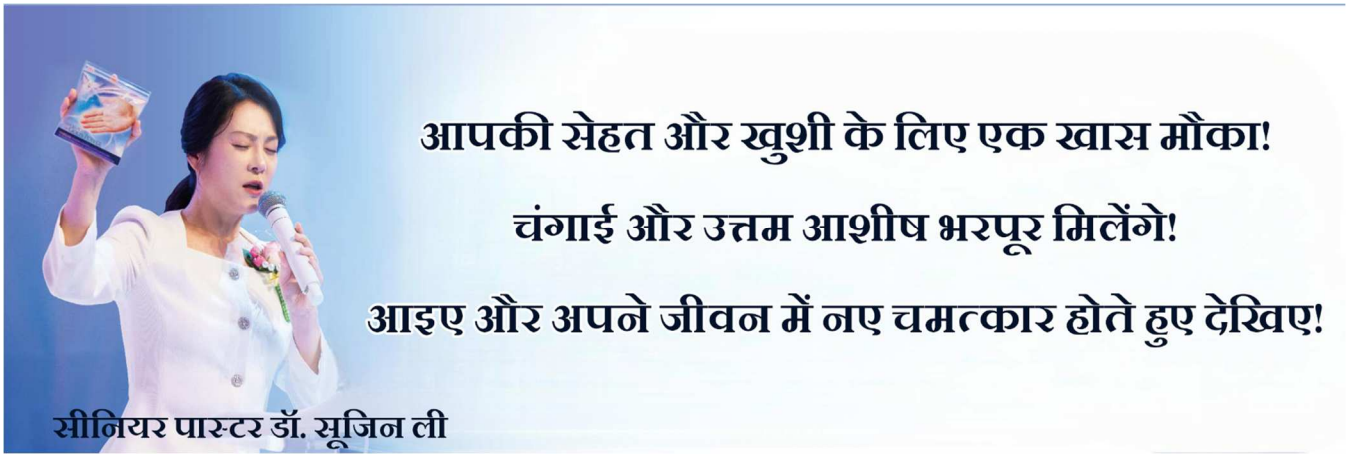

"और यीशु ने ऊँचे स्वर से पुकारकर कहा, "पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।"

यह कहकर उसने प्राण त्याग दिए।" (लूका २३:४६) यीशु ने क्रूस पर लंबे समय तक कष्ट सहा, अपना लहू और जल बहाया। इसलिए मृत्यु से ठीक पहले वे पूरी तरह से थक चुके थे। फिर भी उन्होंने ऊँचे स्वर से पुकारकर कहा, "पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ," और फिर उन्होंने प्राण त्याग दिए। चौथे वचन के विपरीत, जहाँ उन्होंने कहा था, "हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर," यहाँ उन्होंने परमेश्वर को "पिता" कहकर संबोधित किया, क्योंकि उनका प्रायश्चित का कार्य पूरा हो चुका था। यीशु द्वारा अपनी आत्मा को परमपिता को सौंपना तो फिर प्रश्न यह है कि उद्धारकर्ता के रूप में पृथ्वी पर आए यीशु ने अपनी आत्मा परमपिता परमेश्वर को क्यों सौंप दी? मनुष्य आत्मा, प्राण और शरीर से बना है (१ थिस्सलुनीकियों ५:२३)। मृत्यु के समय आत्मा और प्राण शरीर को छोड़ देते हैं। उस समय परमेश्वर की संतानें परमपिता की गोद में जाती हैं, जबकि अन्य लोग नरक में जाते हैं (लूका १६:१९-३१)। और शरीर दफनाया जाता है और सड़कर अंततः धूल में मिल जाता है। परमेश्वर के पुत्र होने के कारण, यीशु भी देह में इस पृथ्वी पर आए, और हमारी तरह उनके पास भी आत्मा, प्राण और शरीर था। लेकिन क्योंकि उन्होंने क्रूस पर चढ़कर परमेश्वर की सारी इच्छा पूरी की, भले ही उनका शरीर मर गया हो, कोई भी उनकी आत्मा को नष्ट नहीं कर सकता था। इसलिए प्राण त्यागने से पहले उन्होंने अपनी आत्मा परमपिता परमेश्वर के हाथों में सौंप दी।

यदि परमेश्वर केवल हमारी आत्मा को स्वीकार करें और प्राण को नहीं, तो क्या होगा? स्वर्ग में हम केवल सत्य को जानेंगे, लेकिन इस पृथ्वी पर अनुभव किए गए आँसू, दुःख और पीड़ा को नहीं समझ पाएँगे—जो प्राण के माध्यम से अनुभव होते हैं। जैसे अदन की वाटिका में आदम, हम स्वर्ग के आनंद की सराहना नहीं कर पाएँगे और न ही हृदय से धन्यवाद दे पाएँगे। इसी कारण परमेश्वर हमारी आत्मा और प्राण दोनों को साथ में स्वीकार करते हैं।

एक और कारण यह है कि सृष्टिकर्ता परमेश्वर केवल ब्रह्मांड की व्यवस्था और चक्रों को ही नहीं, बल्कि सभी मनुष्यों के जीवन, मृत्यु, आशीष और श्राप को भी नियंत्रित करते हैं। मत्ती १०:२९-३१ में लिखा है, "क्या दो गौरैया एक पैसे में नहीं बिकतीं? फिर भी उनमें से एक भी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना भूमि पर नहीं गिरती... इसलिए मत डरो; तुम बहुत सी गौरैयों से अधिक मूल्यवान हो।" यदि एक गौरैया भी परमेश्वर की अनुमति के बिना नहीं गिरती, तो परमेश्वर की संतान के लिए कितना अधिक! सब कुछ परमेश्वर का है और उसकी प्रभुता के अधीन होता है, और वही हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देने वाला है। इसलिए यीशु ने स्वयं अपनी आत्मा को परमपिता के हाथों में सौंपते हुए प्रार्थना की। यीशु ने ऊँचे स्वर में प्रार्थना क्यों की तो फिर यीशु ने क्रूस की पीड़ा के बीच जानबूझकर ऊँचे स्वर में क्यों प्रार्थना की, "पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ"? इसका कारण यह था कि सभी लोग सुन सकें और समझ सकें, और यह भी कि ऊँचे स्वर में पुकारकर प्रार्थना करना परमेश्वर की इच्छा है। इसके अतिरिक्त, क्योंकि यह आत्मा को परमेश्वर को सौंपने की प्रार्थना थी, उन्होंने पूरे मन से जोर से पुकारा।

इसके साथ ही, यीशु की यह प्रार्थना—"मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ"—यह घोषणा भी है कि उन्होंने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हर वचन का पूर्ण रूप से पालन करते हुए अपना कार्य पूरा कर लिया।